

HISTORY (H)

B.A Part-I paper-II

Page No-1
Date
Signature

Q10 → द्वितीय विश्व युद्ध कालीन एकाग्रता का विफलन कैसे हुआ?
जिसने द्वितीय विश्व युद्ध में अमेरिका, ब्रिटेन, एवं फ्रांस ने अपनी युद्ध शक्ति को जोड़कर दूसरी राहों (जर्मनी इटली एवं जापान) का इलाका मुकाबला किया था। युद्ध के समय मित्र राष्ट्रों की इस एकाग्रता में ऐलासनीयता के बाद कि युद्ध के बाद शक्ति स्थापित होगी, किन्तु विश्व युद्ध समाप्त होने ही यह आशा रही सिद्ध नहीं हुई। इस एवं अमेरिका के रूप में दो महा शक्तियों का अलग हुआ युद्ध कालीन एकाग्रता का विफलन हो गया जिसके निम्नलिखित कारण हैं: -

① सोवियत संघ की सामग्राही व्यवस्था: - युद्ध कालीन एकाग्रता का विफलन का महत्वपूर्ण कारण सोवियत संघ में सामग्राही व्यवस्था का विकास था। युद्ध के समय तो ब्रिटेन, फ्रांस एवं अमेरिका जैसे यूरोपीय देशों की समस्त शक्ति दूसरी राहों का दमन थी। इस कारण को अपनी रीढ़ में मिलाने के लिए उन्हें इसी व्यवस्था पर अत्यन्त विश्वास लगाया गया। परन्तु अत्यन्त अपने वे इस का इतना दमन करने चाहते थे कि अपनी सामग्राही व्यवस्था यूरोपीय के लिए खतरा बनने लगे। मही का कारण था, कि 1941 ई में जर्मनी द्वारा इस पर आक्रमण करने पर इतने 05 वर्ष इस के बीच हुए समझौते को धुलकाने का कोई प्रयास नहीं किया गया। पश्चिमी देशों ने तो इसे विधेयान्तक शक्ति की स्थापना को इस के इस महत्व को कि युद्ध का द्वितीय मोर्चा फ्रांस में खोला गया था कि, चर्चिल ने यह कहकर खराई में डालने का प्रयत्न किया, कि इसमें मोर्चा बालकन प्रदेश में खोला जाये, किन्तु यह प्रयत्न अत्यन्त के अन्तर्गत पर वर्ष 1942 ई से 1944 ई तक जारी रही। यूरोपीय मित्र देश चाहते थे नहीं थे कि इस पर जर्मनी के इतने प्रहार हो कि इस युद्ध स्थिति में उभर सकें।

② सोवियत संघ का राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति रुझान: - यूरोपीय एवं साम्राज्यवादी शक्ति के पंगुल से अपने को आजाद करने के लिए एशिया एवं अफ्रीका के विभिन्न उपनिवेशों में तो राष्ट्रीय आन्दोलन चल रहे थे। उन्हें द्वितीय विश्व युद्ध ने और अधिक प्रोत्साहित किया। इस इस प्रकार के आन्दोलनों का प्रत्यक्ष प्रभाव ब्रिटेन ने इस प्रकार के आन्दोलनों को कुचलने का महत्त्व प्रमाण किया। अतः इस एवं ब्रिटेन के संबंध में इस पर अपनी शक्ति हो गई।

③ युद्ध काल में इस के प्रति अनिश्चितता: - युद्ध काल में इस के मित्र राष्ट्रों ने सदा ही उसके प्रति अनिश्चितता की धारणा रखी। 13 अगस्त 1943 ई को चर्चिल ने यूरोप-एशिया और पूरब में राजवंशों के पुनर्स्थापन की बात कही। मास्को रोस द्वारा इस बात का प्रोत्साहित किने गये पर चर्चिल ने उसे समझा देना नहीं कहा कि जिस अमेरिका ने जापान पर हमला था जिसने ब्रिटेन

को विश्वास में ले लिया। परन्तु उस को सब विषय में कोई जानकारी नक गयी थी।

(६) मुंबई के समुदायों में मौजबूत होना: - जैसा की द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हुआ ५ मार्च १९४६ ई को अखिल भारतीय कांग्रेस के फुल्लन नामक स्थान पर सविमल सभा को लौट आने की संज्ञा देते हुए अपने आधार में सभा का आयोजन किया। सविमल सभा में मुंबई काल में ही स्थिति को गंभीर एवं परन्तु सभा ने सभा अपने लिए एक ऐसी आचारशिला खड़ा कर - चाहेवा बाँटिये पर खड़ा हो कर खंगल गये कर लें। उसी दिन आगरा को मुंबई के बाद उपरान्त समुदायों के समुदाय में अमेरिका एवं ब्रिटेन सभी प्रत्येक सभा और अधिक मजबूत बन दिया जाय, मुंबई मुम्बई १९ मार्च की समुदायों के समुदाय में प्रश्न पर सभा को विभिन्न और अमेरिका से मिल जा रही समुदाय सविमल सभा को अन्तर्गत यूरोप के एक संयुक्त सभा की स्थापना की जाय भी मुंबई देश को लगे थे। १० अप्रैल १९४५ को एक समुदाय देश पर से प्रकाशित किया की "यदि यूरोप को सविमल सभा के पूरे से संचालन हो तो पश्चिमी देशों को एक होना पड़ेगा।

इस प्रकार मुंबई काल के बाद पश्चिमी मुंबईवादी राज्यों द्वारा सभा के सभा अपने मुंबईवादी से प्रेरित होकर २० सितंबर १९४५ ई को सविमल समुदाय पर अमेरिका में लिखा है "पश्चिमी और पश्चिम में सभी विश्वास को समुदाय का समुदाय का रहे हैं" संकेत एवं सभा के वातावरण में सभा का अन्तर्गत में सभा समुदायों में बाँट आता अब विश्व - समुदाय का एक समुदाय में मुंबई समुदायों में सभा मुंबई का सभा में सभा सभा है

(समाप्त)